SEAT No.________

[10]

No. of Printed Pages : 02

S/C

SARDAR PATEL UNIVERSITY

M.A. I[st] Semester EXAMINATION (Old)

Wednesday, 1[st] November-2017

10-00 a.m.to1-00 p.m.

PA01CHIN01 : Hindi

(भक्ति काव्य)

पूर्णांक : 70

प्रश्न-1. कबीर की भक्ति को सोदाहरण समझाइए।

अथवा (17)

'भ्रमरगीत' की काव्यकला पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न-2. 'अयोध्याकाण्ड' के भावसौन्दर्य पर प्रकाश डालिए।

अथवा (17)

'नागमती वियोग खंड' के आधार पर नागमती का चरित्र चित्रण कीजिए।

प्रश्न-3. किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए- (18)

क. कबीर की भाषा

अथवा

तुलसी का कृतित्व

ख. 'अयोध्याकाण्ड' के राम

अथवा

'पद्मावत' का संदेश

प्रश्न-4 ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए। (18)

क. "हम तौ एक एक करि जाना।
दोई कहैं तिनहीं कौं दजिख, नांहिन पहिचांनां।
एकै पवन एक ही पानी, एक ही जोति संसारा।
एक ही खाक घड़े सब भांड़े, एक ही सिरजनहारा।।
जैसें बाढ़ीं कष्ट ही काटै, अगिनि न काटै कोई।।
माया मोहे अरथ देखि करि, काहै कौं गरबांनां।
निरभै भाय कछू नहीं व्यापै, कहै कबीर दिवानां।।"

अथवा

क. "मातु पिता भगिनी प्रिय भाई। प्रिय परिवारु सुहृय समुदाई।।
सासु ससुरगुर सजन सहाई। सुत सुंदर सुसील सुखदाई।।
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते। पिय बिनु तियहि तरनिहु ते ताते।।
तनु धनु धामु धरनि पुर राजू। पति बिहीन सबु सोक समाजू।।
भोग रोगसम भूषन भारु। जम जातना सरिस संसारु।।
प्रान नाथ तुम्ह बिनु जग माहीं। मो कहुँ सुखद कतहुँ कछु नाहीं।।
जिय बिनु देह नदी बिनु बारी। तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी।।
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारें। सरद बिमल बिधु बदनु निहारें।।
खग मृग परिजन नगरु बनु बलकल बिमल दुकूल।
नाथ साथ सुरसदन सम परनसाल सुखु मूल।। "

ख. " सावन बरस मेह अति पानी। भरनि परी, हौं बिरह झुरानी।।
लाग पुनरबसु पीउ न देखा। भइ बाउरि, कहँ कंत सरेख।।
रकत कै आँसू परहिं भुइँ टूटी। रेंगि चली बस जस बीरबहूटी।।
सखिन्ह रचा पिउ संग हिंडोला। हरयरि भूमि, कुसुभी चला।।
हिय हिंडोल अस डोलै मोरा। बिरह झुलाइ देइ झकझोरा।।
बाट असूझ अथाह गँभीरी। जिउ बाउर, भा फिरै भँभीरी।।
जग जल बूड़ जहाँ लगि ताकी। मोरि नाव सेवक बिनु थाकी।।
परबत समुद अगन बिच, बीहड़ वन बनढाँख।
किमि कै भेंटौं कंत तुम्ह? ना मोहि पाँव न पाख।।"

अथवा

ख. "काहे को रोकत मारग सूधो?
सुनहु मधुप ! निर्गुन कंटक तें राजपंथ क्यों रूँधो?
कै तुम सिखै पठाए कुब्जा, कै कही स्यामघन जूधौं।
बेद पुरान सुमृति सब ढूँढ़ौ जुवतिन जोग कहूँ धों?
ताको कहा परेखो कीजै जानत छाछ न दूधो।
सूर मूर अक्रूर गए लै व्याज निबेरत ऊधो।"

—x —x —

S/C

SEAT No.________

[11]

No. of Printed Pages : 02

SARDAR PATEL UNIVERSITY

M.A. I[st] Semester EXAMINATION

Wednesday, 1[th] November-2017

10-00 a.m.to1-00 p.m.

PA01CHIN21 : Hindi

(भक्ति काव्य)

पूर्णांक : 70

प्रश्न-1. कबीर के समाजसुधारक पक्ष को उजागर कीजिए।

अथवा (17)

'गोरा बादल युद्ध खंड' की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न-2. भक्तिकाल में भ्रमर गीत परंपरा को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'कवितावली' के काव्यसौन्दर्य पर प्रकाश डालिए। (17)

प्रश्न-3. किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए- (18)

क. 'कवितावली' का उत्तरकांड

अथवा

सूर की काव्य भाषा

ख. कबीर की निर्गुण भक्ति

अथवा

जायसी का कृतित्व

प्रश्न-4 ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए। (18)

क. "हम तौ एक एक करि जाना।
दोई कहैं तिनहीं कौं दजिख, नांहिन पहिचानां।
एकै पवन एक ही पानी, एक ही जोति संसारा।
एक ही खाक घड़े सब भांड़े, एक ही सिरजनहारा।।
जैसें बाढ़ीं कष्ट ही काटै, अगिनि न काटै कोई।।
माया मोहे अरथ देखि करि, काहै कौं गरबांनां।
निरभै भाय कछू नहीं व्यापै, कहै कबीर दिवानां।।"

अथवा

क . "काहे को अनेक देव सेवत, जागै मसान,
खोवत अपान, सठ होत हठि प्रेरे रे।
काहे को उपाय कोटि करत मरत धाय,
जाचत नरेस देस देस के, अचेत रे।
तुलसी प्रतीति बिनु त्यागै तैं प्रयाग तनु,
धन ही क हेतु दान करु-रवेत रे।
पात दै धतूरे के दै, भोरे के भवसे सौं,
सुरेश हू की संपदा सुभाय सों न लेत रे।।"

ख. "लोभ पाप कै नदी अंकोरा। सत न रहै हाथ जौ बोरा।।
जहँ अँकोर तहँ नीक न राजू। ठाकुर केर बिनासै काजू।।
भ जिउ धिउ रखवान्ह केरा। दरब लोभ चंडौल न हेरा।।
जाइ साह आगे सिर नावा। ए जगसूर ! चांद चलि आवा।।
जावत हैं सब नरवत तराई। सोरह सै चँडोल सो आई।।
चितउर जेति राज कै पूँजी। लेई सो आइ पदमावति कूँजी।।
बिनती करै जोरि कर खरी। लेई सौंपौं राजा क घरी।।
इहाँ उहाँ कर स्वामी ! दुऔ जगत मोहिं आस।
पहिले दरस देखावहु, तौ पठवहु कबिलास।।"

अथवा

ख. "उद्धव मन अभिलाष बढ़ायौ।
जदुपति जोग जानि जिय, साँचो नयन अकास चढ़ायौ।।
नारिन पै मोकों पठवत हौ कहत सिखावन जोग।
मनहीं मन अब करत प्रसंसा है मिथ्या सुख-भोग।।
आयसु मानि लियो सिर ऊपर प्रभु-आज्ञा परमान ।
सूरदास प्रभु पठवत गोकुल मैं क्यों कहौं कि आन।।"

— X —

[9] No. of printed page: 1

SARDAR PATEL UNIVERSITY
M A (I Semester) Examination
Friday, 03rd November 2017
10.00 am – 1.00 pm
PA01CHIN22 - Hindi
नाटक एवं अन्य विधाएँ (निबंध एवं जीवनी)

Total Marks : 70

प्र.१ ससंदर्भ व्याख्या कीजिए – (१८)

(क) जिन कर्मों से दूसरे के वास्तविक सुख का साधन और दुख की निवृत्ति हो वे शुभ और सात्विक हैं तथा जिस अन्तःकरण वृत्ति से इन कर्मो से प्रवृत्ति हो वह सात्विक है ।

अथवा

(क) मैं मनुष्य के नाखून की ओर देखता हूँ तो कभी–कभी निराश हो जाता हूँ । ये उसकी भयंकर पाशवी वृत्ति के जीवन्त प्रतीक हैं । मनुष्य की पशुता को जितनी बार भी कष्ट दो वह मरना नहीं जानती ।

(ख) ब्राह्मण न किसी के राज्य में रहता है और न किसी के अन्न से पलता है; स्वराज्य में विचरता है और अमृत होकर जीता है ।

अथवा

(ख) इन पुजारियों और पंड़ो को मैं हिन्दू जाति का अभिशाप समझता हूँ, वही हमारे पतन का कारण है ।

प्र.२ आधुनिक हिन्दी नाटक की विकास–यात्रा की चर्चा कीजिए । (१८)

अथवा

प्र.२ 'चन्द्रगुप्त' की चरित्रगत विशेषताएं स्पष्ट कीजिए । (१८)

प्र.३ हिन्दी में जीवनी की विकास–यात्रा पर एक निबंध लिखिए । (१७)

अथवा

प्र.३ 'कलम का सिपाही' की समीक्षा कीजिए । (१७)

प्र.४ टिप्पणी लिखिए : (१८)

(क) चन्द्रगुप्त नाटक की भाषा

अथवा

(क) 'करुणा' की विशेषताएं

(ख) नाखून क्यों बढ़ते हैं, की विशेषताएं

अथवा

(ख) कलम का सिपाही का शिल्प वैशिष्ट्य

*****

S.C

[66] Seat No. __________ No. of printed page: 01

SARDAR PATEL UNIVERSITY
M.A. (I - Semester) Examination
Tuesday, 7th November
2017
10.00 am - 1.00 pm
PA01CHIN23 : Hindi
भाषाविज्ञान

कुल गुण : ७०

प्र.१ भाषा-संरचना और भाषिक प्रकार्य को समझाइए । (१७)

अथवा

प्र.१ भाषाविज्ञान का स्वरूप स्पष्ट करते हुए ऐतिहासिक और तुलनात्मक भाषाविज्ञान की चर्चा कीजिए ।

प्र.२ स्वन को परिभाषित करते हुए स्वनों के भेदों पर प्रकाश डालिए । (१८)

अथवा

प्र.२ रूप प्रक्रिया का स्वरूप स्पष्ट कीजिए ।

प्र.३ अर्थ की विविध परिभाषाएँ बतलाते हुए अर्थ परिवर्तन के कारणों पर प्रकाश डालिए । (१७)

अथवा

प्र.३ अर्थ परिवर्तन की दिशाओं को सोदाहरण समझाइए ।

प्र.४ टिप्पणी लिखें (**किन्हीं दो**): (१८)
१) भाषा की विशेषताएँ
२) स्वनिम की अवधारणा
३) रूपिम की अवधारणा
४) वाक्य के भेद

----

(79)

Seat No________ No.of Printed Pages:1

SARDAR PATEL UNIVERSITY
M.A(I- Semester)C.B.C.S. EXAMINATION
Thursday,9th November 2017
10.00 A.M. to 01.00 P.M.
SUBJECT : HINDI
SUBJECT CODE: PAO1EHIN21

नाट्य सिद्धांत

कुल गुण:७०

सूचना: सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्र:१ भारतेन्दु द्वारा प्रतिपादित नाटक के प्रयोजन पर प्रकाश डालिए। (१८)

अथवा

प्र.१ जयशंकर प्रसाद के रंगमंच संबन्धी विचारों को रेखांकित कीजिए।

प्र:२ ग्रीक रंगमंच के उदभव और विकास की चर्चा कीजिए। (१८)

अथवा

प्र:२ ब्रेख्त के महाकाव्यात्मक रंगमंच की विस्तार से विवेचना कीजिए।

प्र:३ माहनराकेश के नाट्य-भाषा संबंधी विचारों को समझाइए। (१८)

अथवा

प्र:३ स्तानिस्लावस्की के अभिनय सिद्धांत की चर्चा कीजिए।

प्र:४ टिप्पणी लिखिए। (कोई भी दो) (१६)

(१) चार प्रकार के अभिनय।

(२) जगदीशचंद्र माथुर के लोकनाट्य संबन्धी विचारों।

(३) नाटक के पाश्चात्य तत्व।

(४) रस योजना।

☺☺☺☺☺☺☺☺☺☺

— x —
(1)

Sc

[80] Seat No. _________ No. of printed page: 1

SARDAR PATEL UNIVERSITY
M. A. (I Semester) Examination
Thursday, 09th November 2017
10.00 am – 1.00 pm
PA01EHIN22 - HINDI
दृश्य-श्रव्य माध्यम लेखन : इतिहास ।

Total Marks : 70

प्र.१ मुद्रण माध्यम का महत्त्व बताते हुए उनके इतिहास को संक्षिप्त चर्चा कीजिए । (१७)

अथवा

प्र.१ रेडियो नाटक लेखन के मूलभूत आधार बिंदुओं की चर्चा कीजिए ।

प्र.२ पाठ्य-नाटक और रेडियो नाटक का अंतर स्पष्ट कीजिए । (१८)

अथवा

प्र.२ रेडियो का महत्त्व बताते हुए रेडियो धारावाहिक की चर्चा कीजिए ।

प्र.३ टेलीविज़न का परिचय देते हुए टेलीविज़न के विकास की चर्चा कीजिए । (१७)

अथवा

प्र.३ 'आलेख रूपक' को विस्तार से समझाइए ।

प्र.४ **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए । (१८)

(अ) फिल्म और टी.वी. लेखन में अंतर ।
(ब) टेलीविज़न लेखन की चुनौतियाँ ।
(क) रेडियो रूपपांतरण ।
(ड) संगीत रूपक ।

____

5e

[72] Seat No. _________ No. of printed page: 1

SARDAR PATEL UNIVERSITY
M. A. (I Semester) Examination
Saturday, 11th November 2017
10.00 am – 1.00 pm
PA01EHIN23 - HINDI
लोक साहित्य

Total Marks : 70

प्र.१ 'लोक' की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए। (१७)

अथवा

प्र.१ लोकवार्ता की परिव्याप्ति की चर्चा कीजिए।

प्र.२ लोक संस्कृति क्या है? समझाइए। (१८)

अथवा

प्र.२ लोक संस्कृति के तत्वों को उजागर कीजिए।

प्र.३ लोक साहित्य के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए। (१७)

अथवा

प्र.३ लोक साहित्य के क्षेत्र को स्पष्ट कीजिए।

प्र.४ **किन्ही दो** पर टिप्पणी लिखिए – (१८)

(१) लोक एवं जन
(२) लोक संस्कृति का वैशिष्ट्य
(३) हिन्दी लोक साहित्य के पाश्चात्य अध्येता
(४) हिन्दी लोक साहित्य के भारतीय अध्येता

---

[73] SEAT No.________ No. of Printed Pages : 1

SARDAR PATEL UNIVERSITY,
M.A.SEMESTER-I (CBCS) EXAMINATION, 2017
Saturday, 11, November,
10.00 A.M. TO 01.00 P.M.
SUBJECT: HINDI
SUBJECT CODE: PA01EHIN24

कुल गुण-७०

"अनुवाद सिद्धांत-स्वरुप-क्षेत्र"

सूचना :- सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

प्रश्न.०१ व्युत्पत्ति का अर्थ बताते हुए, अनुवाद की व्युत्पत्ति की चर्चा कीजिए ।

अथवा (१७)

प्रश्न.०१ अनुवाद की प्रकृति को स्पष्ट कीजिए ।

प्रश्न.०२ भारतीय विद्वानों द्वारा प्रस्तुत अनुवाद की परिभाषाएँ लिखिए ।

अथवा (१८)

प्रश्न.०२ अनुवाद के स्वरुप को स्पष्ट करते हुए विस्तार से चर्चा कीजिए ।

प्रश्न.०३ कार्यालय के क्षेत्र में होनेवाले, अनुवाद की चर्चा करें ।

अथवा (१७)

प्रश्न.०३ पाश्चात्य विद्वानों द्वारा प्रस्तुत अनुवाद की परिभाषाओं की समीक्षा अपने शब्दों में कीजिए ।

प्रश्न.०४ टिप्पणियां लिखिए । (१८)

(अ) बातचित का क्षेत्र और अनुवाद ।

(ब) अनुवाद कला या विज्ञान ।

अथवा

(क) साहित्य के क्षेत्र में अनुवाद की भूमिका ।

(ख) धर्म के क्षेत्र में अनुवाद का महत्त्व ।